Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

हर्षवर्धन कालीन धार्मिक स्थिति का अध्ययन

Parsoon*

M.A., M.Phil., NET, Department of History, MDU, Rohtak

शोध सार - ***हर्षवर्धन काल में धर्म व्यक्तिगत आस्था का विषय था। इस समय ब्राह्मण, बौद्ध, जैन, शाक्त, शैव, सूर्य, कापालिक, कालमुख आदि विभिन्न संप्रदायों का प्रचलन था। इस समय शिव मुख्य आराध्य देव थे। बाणभट्ट की रचना हर्षचरित के प्रारंभ में भी शिव भक्ति का वर्णन है। ब्राह्मण, शैव, बौद्ध धर्मों में तांत्रिक क्रियाओं का चलन था। इस समय ब्राह्मण व बौद्ध धर्म दोनों में अपनी श्रेष्ठता को सिद्ध करने के लिए प्रतिद्वंद्विता थी। ब्राह्मण धर्म में मूर्तिपूजा, यज्ञ, कर्मकांडों का बोलबाला था। परंतु धीरे-धीरे बौद्ध धर्म में भी विलासिता व तांत्रिक पद्धति के कारण पतन शुरू हो गया। हर्षवर्धन ने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। प्रयाग व कन्नौज सभा हर्ष के धार्मिक होने का प्रमाण देती हैं। इन सभाओं में हर्ष ने अपना सर्वस्व दान कर दिया था। हर्ष द्वारा सभी धर्मों के लोगों को दान देने से पता चलता है कि उसके लिए सभी धर्म समान थे।***

मुख्य शब्द: धर्म, आस्था, ब्राह्मण धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, शक्ति पूजा, सूर्यपूजा, पाशुपत धर्म, कापालिक व कालमुख, धार्मिक सहिष्णुता

----------X----------

भूमिका

बाणभट्ट छठी शताब्दी के प्रमुख वर्धन वंश का दरबारी कवि था। उसकी रचनाओं से हमें हर्ष कालीन धार्मिक स्थिति का ज्ञान होता है। बाणभट्ट के अनुसार हर्ष कालीन समाज में धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण था। बाण के समय वैदिक ब्राह्मण, बौद्ध, जैन धर्म का प्रचलन था। शुरुआत में हर्ष ब्राह्मण धर्म में आस्था रखता था परंतु बाद में उसका झुकाव बौद्ध धर्म की ओर हो गया। हर्षवर्धन एक विद्वान राजा था इसलिए उसने स्वयं भी हर धर्म के विद्वानों का सम्मान किया। हर्षचरित में हर्षवर्धन को साक्षात धर्म का अवतार बताया गया है। बौद्ध धर्म के प्रभाव से हर्ष ने अपनी करुणामई छवि बनाई तथा राजाओं को क्षमादान दिया व पशुवध पर रोक लगाई।

बाणभट्ट के अनुसार हिंदू धर्म के अनेक देवी-देवताओं विष्णु, लक्ष्मी, कुबेर आदि का पूजन होता था। एक ही कुल में अनेक धर्मों के पालन का प्रमाण भी मिलता है। बाण के विवरण से पता चलता है कि धर्म को व्यक्तिगत विषय माना जाता था।

हर्ष कालीन समय में ब्राह्मण धर्म का बोलबाला था। ब्राह्मण धर्म की प्रधानता के कारण ही ह्वेनसांग ने भारत को ब्राह्मणों का देश कहा। यह धर्म अपने भिन्न-भिन्न संप्रदायों में बटा था जैसे- वैष्णव, शैव, शाक्त आदि। बाणभट्ट ने हर्षचरित में आहर्त (जैन), श्वेतपट (श्वेतांबर जैन सम्प्रदाय), पांडु भिक्षु (श्वेत वस्त्र धारण करने वाले भिक्षु), भागवत (वैष्णव), कपिल (सांख्य मत मानने वाले), कणाद (वैश्विक मत को मानने वाले), औपनिषदिक (न्याय दर्शन को मानने वाले), पौराणिक, शैव, पंचरात्रिक (वैष्णव धर्म की एक शाखा), जैन, बौद्ध धर्म आदि संप्रदायों का वर्णन किया है। इनमें से अधिकतर ब्राह्मण धर्म से संबंधित संप्रदाय थे। विष्णु, शिव, सूर्य, दुर्गा, पार्वती आदि की मूर्ति के रूप में पूजा की जाती थी। इन मूर्तियों को दूध से नहलाकर, पुष्प, धूप, ध्वज आदि समर्पित किए जाते थे। हर्षकालीन समय में यज्ञ, संस्कार, पंचमहायज्ञ आदि कर्मकांडों का प्रचलन था।[1] ब्राह्मण धर्म के कई मंदिरों का वर्णन कन्नौज में मिलता है। यहां कई शैव मंदिर थे जो कि माहेश्वर नाम से प्रसिद्ध थे। शैव मंदिरों का होना, शैव धर्म व उसकी लोकप्रियता को दर्शाता है।[2]

हर्ष कालीन साहित्यिकग्रंथों से भी हमें उस समय के धर्म की जानकारी मिलती है। हर्षचरित, कादंबरी, रत्नावली, प्रियदर्शिका आदि में शिव के नामों का अनेक बार उल्लेख हुआ है जैसे- हर्षचरित के प्रथम उच्छवास के प्रथम श्लोक में बाण शिव की वंदना करते हैं।[3] कादंबरी में महाश्वेता द्वारा अपने प्रियतम के मिलन की आशा में शिव के व्रत करने का वर्णन है।[4] इससे शैव धर्म की प्रसिद्धि का पता चलता है।

www.ignited.in

कादंबरी में बाण ने चंडिका के मंदिर का वर्णन किया है इससे प्रतीत होता है कि उस समय इस देवी के प्रति भी लोगों में आस्था थी।[5] बाणभट्ट की कादंबरी से ब्राह्मण वर्ग को विशेष सम्मान देने की जानकारी मिलती है। सम्राट हर्ष की रत्नावली में शिव पार्वती की स्थिति का वर्णन भी मिलता है। हर्षचरित से सूचना मिलती है किहर्ष मनु केसमान वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था का रक्षक था।[6]

जिन धार्मिक संप्रदायों की सूची बाण ने दी है इनके अलग-अलग दर्शन व साहित्य थे। वे आपस में वाद विवाद भी करते थे। सांख्य, वैशेषिक, नैयायिक व वेदान्त इन चारों को अपनाकर व्यक्ति नित्यता व अनित्यता के बारे में ज्ञान प्राप्त करते थे।[7]

हर्ष के पूर्वज भगवान शिव और सूर्य के उपासक थे। प्रारंभ में हर्ष भी अपने कुल देवता शिव का उपासक था परंतु कालांतर में उसने बौद्ध धर्म की ओर अपना झुकाव प्रदर्शित कराया। हर्ष पर भिक्षु दिवाकर मित्र का अत्यधिक प्रभाव था। चीनी यात्री ह्वेनसांग से मिलने के बाद हर्ष ने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को राजश्रय प्रदान किया। बौद्ध धर्म के प्रति हर्ष की गहरी आस्था का ही परिणाम था कि कन्नौज में फाह्यान को दो बौद्ध विहार देखने को मिले।[8] ह्वेनसांग के अनुसार थानेश्वर राज्य का राजा क्षत्रिय था और अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध था। वह बौद्ध धर्म और योग्य व्यक्तियों का संरक्षक था।[9] हर्षवर्धन ने बौद्ध धर्म को अन्य धर्मों की तुलना में श्रेष्ठ सिद्ध करने हेतु कन्नौज में विभिन्न धर्मों के संप्रदायों की एक विशाल सभा बुलाई सभा 20 दिनों तक चली। इस सभा में अनेक देशों के राजा, ब्राह्मण, विद्वानों ने भाग लिया। ह्वेनसाग ने इस सभा की अध्यक्षता की। इस सभा का उद्देश्य महायान बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करना था। परंतु इस सभा में हर्ष की धार्मिक असहनशीलता का भी पता चलता है कि किस प्रकार से उसने ह्वेनसांग के विरुद्ध बोलने वाले व्यक्तियों को जीभ काटने की धमकी दी।[10] हर्ष ने बुद्ध की स्वर्ण मूर्ति बनवाई और उसे एक सजे हुए हाथी पर रखकर जुलूस निकाला गया। सभा में बुद्ध मूर्ति की पूजा की गई और इंद्र, ब्रह्मा जैसे हिंदू देवताओं को बुद्ध की मूर्ति के दोनों और सेवा के लिए लगाया गया।[11] बौद्ध धर्म के प्रसार का ह्वेनसांग के विवरण से पता चलता है कि जब वह भारत आया तब नालंदा विश्वविद्यालय का भरण-पोषण सौ गांवों के राजस्व से किया जाता था। इस प्रकार से नालंदा हर्ष काल में विशाल बौद्ध विहार था।[12]

हर्ष के समय प्रयाग में हर पाँचवे वर्ष में एक सभा आयोजित की जाती थी, जिसे महामोक्षपरिषद कहा गया। इस सभा में हर्षवर्धन 75 दिनों तक ब्राह्मणों, श्रमणों, निग्रंथों, अनाथो, निर्धनों को अपना सर्वस्व दान कर देता था। इस अवसर पर राजकोष को रिक्त कर दिया जाता था। इस सभा में हर्ष द्वारा अपने पहने गए वस्त्र, आभूषणों को भी दान कर देने का तथा बहन राज्यश्री से उसके पुराने वस्त्र मांग कर तन ढकने का विवरण मिलता है। हर्ष इस परिषद में तीन दिन बुद्ध, सूर्य, शिव की पूजा करता था।[13] अपना सब कुछ दान करने के बाद हर्ष के पास केवल हाथी, घोड़ा, सैनिक सामान ही शेष बचे थे जो कि राज्य की रक्षा के लिए आवश्यक थे। हर्ष ने अपना सर्वस्व दान अच्छे कार्य में लगाने के लिए अपने आप को धन्य माना।[14] हर्ष द्वारा बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के बाद भी बौद्ध धर्म कापतन होने लगा था, क्योंकि एक तरफ वैदिक धर्म अपने पुनरुत्थान पर जोर दे रहा था, मीमांसक बौद्ध धर्म पर प्रहार कर रहे थे और दूसरी तरफ बौद्ध संघारामों में विलासिता और व्यभिचार पनप रहा था।[15] हर्षवर्धन द्वारा ह्वेनसांग से मिलने पर महायान धर्म में अपनी जिज्ञासा प्रकट करने को हम यह नहीं मान सकते कि वह पूर्णरूपेण बौद्ध बन गया था। वास्तव में उसने चीनी विद्वान के सामने महायान धर्म के प्रति अपना आभार जताया था परंतु कभी भी उसने व्यक्तिगत रूप से अपना धर्म नहीं छोड़ा।[16] बाण के अनुसार जब कामरूप के राजा भास्करवर्मा ने हर्ष को यह संदेश भेजा कि उसने शिव के अलावा किसी और के सामने शीश न झुकाने का प्रण कर रखा है तो हर्ष ने जवाब दिया था- कि 'शिव के अतिरिक्त किसी और के समक्ष शीश झुकाने की आवश्यकता ही क्या है?[17] इससे पता चलता है कि हर्ष एक निष्ठावान शैव था। उसने कभी भी स्वधर्म का पूर्णरूपेण त्याग नहीं किया था।

इस समय जैन धर्म का भी वर्णन मिलता है। बाणभट्ट ने हर्ष काल में क्षपणकों (विद्वानों) तथा दिवाकर मित्र के आश्रम में जैन भिक्षुओं का उल्लेख किया है। दक्षिण में जैन धर्म दिगंबर और श्वेतांबर दो रूपों में विद्यमान था। ह्वेनसांग ने भी श्वेतांबर संप्रदाय का वर्णन किया है।[18]

हर्षवर्धन के समय शैव धर्म कई मतों में बांटा था। इसमें सबसे प्राचीन पाशुपत थे, जिसके प्रवर्तक लकुलीश थे। ह्वेनसांग के अनुसार जालंधर, मालवा, महेश्वरपुर आदि राज्यों में पाशुपत संप्रदाय का चलन था। शैव धर्म का अतिमार्गी रूप थे, कापालिक और कालमुख। वे खोपड़ी में भोजन करते थे। वे मनुष्य की बलि देते थे। कापालिक व कालमुख दोनों तांत्रिक क्रियाएं करते थे। ये कालमुख भैरव की पूजा करते थे तथा उन्हें मदिरा चढ़ाई जाती थी।

इस समय शाक्त संप्रदाय जो शक्ति की पूजा से संबंधित था का भी प्रचलन था। कादंबरी में वर्णन है की शबर, भिल्ल

www.ignited.in

आदिवासी लोग विंध्यवासिनी की पूजा करते थे।[19] इस समय सूर्य पूजा के प्रचलन का भी पता चलता है।

भारत में सूर्य पूजा प्राचीन काल से चली आ रही थी। हर्ष ने प्रयाग सभा में बुद्ध, सूर्य, शिव की पूजा की जससे सूर्य पूजा के अस्तित्व का पता चलता है। हर्ष के पूर्वज प्रभाकरवर्धन व आदित्यवर्धन सूर्य के उपासक थे। सूर्य पूजा का केंद्र मुल्तान में था। ह्वेनसांग ने भी मुल्तान में सूर्य मंदिर का उल्लेख किया है।[20]

कादंबरी में अनेक धार्मिक पदाधिकारियों जैसे परिव्राजिकाओं का वर्णन मिलता है। यह पाशुपत, बौद्ध, जैन, नैष्ठिक संप्रदायों से संबंधित थी, जो कि लाल वस्त्र पहन कर अपनी कथाओं द्वारा धर्म उपदेश दे रही थी।[21] इससे हर्ष कालीन समय में इन धर्मों के होने का आभास होता है।

हर्ष की धार्मिक नीति किसी एक संप्रदाय की ओर उन्मुख ना होकर सभी संप्रदायों के लिए समान थी। बाणभट्ट ने थानेश्वर के वर्णन में यह बताया है कि यहां बौद्ध व ब्राह्मण दोनों का आश्रय स्थल था।[22] प्रयाग में हुई सभा में हर्ष द्वारा सभी धर्मों को दिए दान से यह सिद्ध होता है कि उसके लिए सभी धर्म समान थे। हर्ष ने भारतीय राजत्व सिद्धांत के सच्चे स्वरूप का पालन पूर्णतः किया।[23]

निष्कर्ष

अंत में हम यह कह सकते हैं कि हर्ष एक धार्मिक सहिष्णु तथा विद्या एवं विद्वानों का आदर करने वाला व्यक्ति था। उसके साम्राज्य में ब्राह्मण, बौद्ध, जैन, कापालिक, कालमुख आदि विभिन्न संप्रदायों के प्रचलन था।धर्म व्यक्तिगत रूचि का विषय था। एक ही परिवार में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते थे। एक ही राजवंश के राजाओं द्वारा अलग-अलग धर्मों को मानने का वर्णन मिलता है।

संदर्भ

1. पांडेय, राजबली, प्राचीन भारत, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006, पृ. 314
2. पाण्डेय, हीरालाल, उत्तरी भारत के राजाओं की धार्मिक नीति, जानकी प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण,1988, पृ.13
3. पाण्डेय, अमरनाथ, बाणभट्ट का साहित्यिक अनुशीलन, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 1974, पृ. 1
4. मिश्र, राजदेव, कादंबरी, चैखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2014, पृ.13
5. भारतीय, महेशचंद्र, बाणभट्ट और उनका हर्षचरित, विमल प्रकाशन, गाजियाबाद, 1974, पृ.40
6. अग्रवाल, वासुदेव शरण, हर्षचरितः एक सांस्कृतिक अध्ययन, पटना, 1953, पृ. 50
7. वही. पृ. 191-192
8. पंथारी, भगवती प्रसाद, मौखरि और पुष्यभूति, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1973, पृ. 229-230
9. गोयल, शंकर, प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति, बुक एनक्लेव, जयपुर, 2001, पृ. 118
10. श्रीवास्तव, के.सी, प्राचीन भारत का इतिहास और संस्कृति, यूनिवर्सिटी बुक डिपो, इलाहाबाद, 2012-13, पृ. 490
11. पाठक, विशुद्धानंद,उत्तर भारत का राजनीतिक इतिहास, महावीर प्रैस, वाराणसी, 1973, पृ.67
12. शर्मा, रामशरण, प्रारंभिक भारत का परिचय, ओरिएंट ब्लैकस्वान, दिल्ली, 2009, पृ. 266
13. गोयल, श्रीराम, हर्ष शिलादित्य, कुसुमांजलि प्रकाशन, मेरठ, 1986, पृ.192-194
14. रेउ, विश्वनाथ, भारत के प्राचीन राजवंश, पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर, 2000, पृ. 278
15. पाण्डेय, राजबली, पूर्वोक्त, पृ.315
16. गोयल, श्रीराम, पूर्वोक्त, पृ. 195
17. वही, पृ. 178
18. पाण्डेय, राजबली, पूर्वोक्त, पृ. 315

19. झा, द्विजेंद्रनारायण, श्रीमाली, कृष्णमोहन, प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1981, पृ. 397- 400

20. वहीं, पृ. 400-401

21. अग्रवाल, वासुदेवशरण, कादंबरीः एक सांस्कृतिक अध्ययन, पटना, 1957, पृ. 106

22. पांथरी, भगवती प्रसाद, पूर्वोक्त, पृ.229-230

२३. पाण्डेय, हीरालाल, पूर्वोक्त, पृ. 24

Corresponding Author

Parsoon*

M.A., M.Phil., NET, Department of History, MDU, Rohtak

ydvprasoon@gmail.com